

जैन समाजात प्रचंड खपाचे व लोकप्रिय मासिक



# जैन जागृति

(शुभारंभ : १५-८-१९६९)

www.jainjagruiti.in

६२ ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, भापकर पेट्रोल पंपा  
समोर, सिटी प्राईडच्या पुढची लेन, पुणे ४११०३७.

☎ : (०२०) २४२१५५८३

मोबाईल : संजय ९८२२०८६९९७, सुनंदा ९४२३५६२९९१

संपादक व प्रकाशक : संजय के. चोरडिया एम.ए.

❖ संस्थापक ❖

स्व. श्री. कांतीलालजी चोरडिया

संपादिका : सौ. सुनंदा एस. चोरडिया बी.कॉम.

❖ वर्ष ४७ वे ❖ अंक ११ वा ❖ जुलै २०१६ ❖ वीर संवत् २५४२ ❖ विक्रम संवत् २०७२

या अंकात	पान नं.	पान नं.
● आत्म साधना के लिए आया है, पावसकाल	१५	● समग्र जैन चातुर्मास सूची २०१६ ७२
● ॥ जिनेश्वरी ॥	१९	● आन्तरिक व्यवधान : एषणा ७३
● कव्हर तपशील	३२	● चातुर्मास तिमिरातून तेजाकडे नेणारे प्रकाशपर्व ७५
● सुखी जीवन की चाबियाँ- न्याय युक्त धन	३९	● शरीर में स्वयं रोग-मुक्त होने की क्षमता होती है। ७९
● विचार वारिधि	४५	● अलगाव का द्योतक ८४
● मैं - मैं और मैं	४७	● भगवान का निवास कहाँ? ८५
● गोल्डन डायरी	५२	● जय आनंद ग्रुप, पुणे ८७
● इन्द्रिय संयम करो	५५	● भारतीय जैन संघटना, पुणे ८८
● अपने आपको साधना से सींचने का सीजन है - चातुर्मास	५७	● वीतराग सेवा संघ, पुणे ८९
● हास्यजागृति	५९	● दादावाडी मंदीर, रौप्य महोत्सव ९१
● योग साधना व आरोग्य	६०	● महावीर इंटरनेशनल, अहमदनगर ९२
● ईश्वर रो भजन कर	७१	● शिष्यता से समझ ९३
● विचारधारा	७२	● अल्पसंख्याक बातम्या ९३
		● जयंति जैनम् संस्कार शाला ९९

● वीडिजे ग्रुप, भायंदर	१९	● आनंद जैन पाठशाला, पुणे	११३
● जैन सोशल ग्रुप, नाशिक	१००	● पुणे चातुर्मास	११५
● जैन सोशल ग्रुप, पर्यावरण दिन	१०१	● चातुर्मास बातम्या	११६
● पिपळगाव बसवंत-समाज नियम	१०२	● वर्षावास की तैयारियाँ	११८
● शिरूर व्यापारी महासंघ	१०४	● दिगंबर जैन संस्थाएँ -	
● सुयश बातम्या	१०६	समन्वय समिती	१२०
● मॉडर्न मॉटेसरी इंटरनॅशनल		● जैन जागृति वर्गणीत वाढ	१२१
प्री स्कूल, पुणे	१११	● विविध धार्मिक, सामाजिक व राजकीय बातम्या	
<p><b>जैन जागृति मासिकाचे वर्गणी दर</b> ❖ एका वर्षात तीन विशेषांकासहित</p> <p>❖ पंचवार्षिक वर्गणी - १५५० रु. ❖ त्रिवार्षिक वर्गणी - ९५० रु. ❖ वार्षिक वर्गणी - ३५० रु.</p> <p>(बाहेरगावच्या चेकला १०० रु. जास्त) ❖ या अंकाची किंमत ४० रुपये.</p> <p>❖ वर्गणी व जाहिरात रोखीने/On line/RTGS/AT PAR चेक/पुणे चेकने/मनीऑर्डर/ड्राफ्टने/'जैन जागृति' नावाने पाठवावी.</p> <p>● www.jainjagrti.in ● www.facebook.com/jainjagrtimagazine</p> <p>हे पत्रक संपादक, प्रकाशक, मुद्रक व मालक श्री. संजय कांतीलाल चोरडिया यांनी प्रकाश ऑफसेट, पर्वती, पुणे ९ येथे छापून ६२, ऋतुराज सोसायटी, पुणे ३७ येथे प्रसिद्ध केले. लेखकांच्या मताशी संपादक सहमत असतीलच असे नाही. जैन जागृति संबंधित कोणत्याही कायदेशीर कारवायीसाठी पुणे न्यायालय क्षेत्र ग्राह्य धरले जाईल.</p>			

## 'जैन जागृति' - वर्गणी बँकेत भरू शकता

जैन जागृति मासिकाची वर्गणी रोखीने, मनीऑर्डरने, पुणे चेक, अॅट पार चेक, ड्राफ्टने पाठवावी किंवा 'भारतीय स्टेट बँक' मध्ये जैन जागृति खात्यात वर्गणी भरू शकता. बँकेच्या पे स्लीपवर 'जैन जागृति' लिहावे. बँकेचा तपशील पुढीलप्रमाणे

**STATE BANK OF INDIA** Branch - Market Yard, Pune.  
Current A/c No. : 10521020146 IFS Code : SBIN0006117

आपण जर वर्गणी बँकेत भरली तर वर्गणी भरल्यानंतर पे स्लीपची झेरॉक्स बरोबर आपला ग्राहक क्रमांक, पूर्ण नाव, पत्ता, मोबाईल नंबर ऑफीस मध्ये पाठवावे अथवा बँकेची स्लीप स्कॅन करून E-mail : jainjagrti1969@gmail.com वर पाठवावी. ई-मेलमध्ये ग्राहक क्र., पूर्ण नाव, पत्ता, फोन, मोबाईल नंबर द्यावा म्हणजे आपल्या नावाने वर्गणी जमा केली जाईल.

**जैन जागृति मासिकाचे वर्गणी दर**

पंचवार्षिक	१५५०/- रु.	त्रिवार्षिक	९५०/- रु.	वार्षिक	३५०/- रु.
------------	------------	-------------	-----------	---------	-----------

## जैन जागृति मासिकात जाहिरात व वर्गणीसाठी संपर्क करा

फोन (०२०) २४२१५५८३, मो. संजय:९८२२०८६९९७ सुनंदा:९४२३५६२९९१ [www.jainjagruiti.in](http://www.jainjagruiti.in)  
Email : [jainjagruiti1969@gmail.com](mailto:jainjagruiti1969@gmail.com) • Press Email : [prakash.offset@rediffmail.com](mailto:prakash.offset@rediffmail.com)

### ◆ जैन जागृतिचे प्रतिनिधी ◆

- ❖ भोसरी, चिंचवड, निगडी - श्री. चांदमलजी लुंकड - फोन : २७११९९४९, मो. ९९२१९१९४०९
- ❖ पुणे शहर ❖ कुर्डुवाडी - श्री. सुभाष मोहनलाल लुणिया, मो. ८७९३००००८१
- ❖ गुरूवार पेठ, पुणे - श्री. जैन पुस्तक भंडार, फोन : २४४७२९५८
- ❖ धनकवडी, पुणे - श्री. सुरेंद्र हिरालालजी बोरा, मो. ७५८८९४३०१५, ९९२२१११९६७
- ❖ महावीर प्रतिष्ठान, पुणे - निलम रमेशचंद्र शहा, मो. ९०९६८००५४७
- ❖ सदाशिव पेठ, परिसर, पुणे - सौ. स्वाती राजेंद्रजी कटारिया, मो. : ९८८१२०४३९०
- ❖ वडगाव शेरी, पुणे - सौ. भारती सुभाष नहार, मो. : ९८९०२७८३४६
- ❖ वडगाव मावळ, पुणे - श्री. राजेंद्र बाफना, मो. ९८२२२६२९०१
- ❖ खडकी, पुणे - श्री. विलास मुथा, मो. ९६२३१४८९८४
- ❖ औंध, पाषाण, हिंजवडी, सांगवी, थेरगाव - श्री. शिरीषकुमार शांतीलालजी डुंगरवाल, मो. ९०२१३००५५९
- ❖ दापोडी, पुणे - श्री. प्रवीण झुंबरलालजी चोरडिया, मो. ९९२२७५७७०६
- ❖ नांदेड सिटी, पुणे - श्री. प्रकाशजी हरकचंदजी बोथरा, मो. ९०११९८३६६६
- ❖ दौंड, श्रीगोंदा - श्री. रविंद्र चैनसुखलालजी गुगळे - ९८९०७२३४०२
- ❖ घोडनदी, जि. पुणे - श्री. पारसमलजी बांठिया, मो. : ९२२५५४२४०६
- ❖ अहमदनगर - श्री. महेश एम. मुनोत - मो. ९४२०६३९२३०
- ❖ जामखेड, आष्टी व कर्जत तालुका - श्री. प्रफुल शांतीलालजी सोलंकी - मो. ९४०३६८५६७७, ८०८७७०००७०
- ❖ सोनई - श्री. मदनलालजी सी. भळगट - फोन : ०२४२७-२३१४६१
- ❖ औरंगाबाद - श्री. सुभाषचंदजी मांडोत-फोन: (०२४०) २३५३४३८ मो.: ९४२२७०५९२१
- ❖ मुंबई खारघर- श्री. मदनलालजी गांधी-मो. ९८२०५३६७९३
- ❖ धनसोली, नवी मुंबई - श्री. सुभाष केशरचंदजी गादिया, मो. ९१५८८८६८५
- ❖ नाशिक - श्री. पुखराजजी बाबुलालजी जैन (कवाड) फोन:०२५३-२३११००८,मो.९४२३९३९९९०
- ❖ नाशिक - मनोज लखीचंदजी खिंबसरा, रविवार पेठ, नाशिक. मो. ९७६२२२१५०५
- ❖ बीड - श्री. अतुलकुमार शरदचंद्रजी कोटेचा, मो. ९९६००२४२२४
- ❖ गारगोटी (जि. कोल्हापूर) श्री. श्रीकांत राजाराम शहा, मो. ९८६०१०७७९२
- ❖ श्रीरामपूर -श्री. निलेश सुवालालजी हिरण, मो. : ९३२६९७२७४७
- ❖ लासलगाव - श्री. मनसुखजी साबद्रा, मो. : ९३२६३२५३४७
- ❖ बारामती- डॉ. महावीर छगनलालजी संचेती, फोन : ०२११२-२२३८०७ मो.:९३२५००४९५०
- ❖ अंमळनेर, जि. जळगाव - श्री. मयुरकुमार केवलचंदजी जैन, मो. ९४२२६५७१७७
- ❖ जळगाव - श्री. अनील कुचेरिया, मो. : ९७६३६४५०५५
- ❖ धुळे - श्री. चेतन सतिष कोटेचा, सुभाषनगर, धुळे, मो. ९४०४१९२४३४, ९४२०६६१४२६
- ❖ शहादा, जि. नंदुरबार - श्री. मनोजकुमार विरचंदजी बाफना, मो. ९४२१५२९६२६
- ❖ इचलकरंजी, जि. कोल्हापूर - श्री. पोपटलालजी बिसनदासजी गुगळे, मो. ९८२२६५०९९८
- ❖ मिरज, जि. सांगली - श्री. राजेंद्र वसंतलाल शहा, मो. ९४२११०५७४८
- ❖ कोल्हापूर - सौ. लता कांतीलालजी ओसवाल, मो. ९४२३२८६०१४ फोन.०२३१-२५४२२५३
- ❖ सातारा व सातारा जिल्हा - श्री. जयकुमार कांतीलाल शहा, वाठार, मो. - ७५८८५६१३२०, ९८५०९८२६४४

## आत्म-साधना के लिए आया है पावस काल

लेखक : आचार्य प्रवर श्री हीराचंद्रजी म.सा.

तीर्थकर भगवान् महावीर की आदेय-अनमोल वाणी समयचक्र के तीन विभाग कर रही है। एक शीतलता है, दूसरा उष्णकाल और तीसरा है-पावसकाल। अन्तर से जागृत, आत्मचिन्तन से सम्पन्न, सम्यक्-दर्शन से युक्त साधक किसी भी काल में किसी भी क्षेत्र में आत्म-जागरण में आगे बढ़ता रहता है, परन्तु सामान्य साधक अपनी साधना में द्रव्य की अपेक्षा क्षेत्र की शुद्धि और काल की अनुकूलता चाहता है। इस दृष्टि से पावसकाल श्रेष्ठ है।

पावसकाल द्रव्य से शीतोष्ण काल है। न अधिक सर्दी है, न अधिक गर्मी। सर्दी में ठिठुरन होती है तो गर्मी में प्रसारण। लेकिन शीतोष्ण में आदमी साधना में आगे बढ़ना चाहे तो वह बढ़ सकता है। साधना के लिए पावसकाल श्रेष्ठ है।

पावसकाल में द्रव्य पानी तो प्राप्त होता है, जिनवाणी के पानी की भी सतत वर्षा होती है। व्यवहार में द्रव्य तीर्थ के नाम से भी लोग पानी का उल्लेख करते हैं। तीन विशेषताओं के कारण लोग नदियों के संगम को तीर्थ की संज्ञा देते हैं। उसे चाहे त्रिवेणी के नाम से कहिये या और किसी नाम से, जल का संगम द्रव्य-तीर्थ कहलाता है। द्रव्य-तीर्थ दाह का शमन करता है। ताप से घबराये हुए को शीतल जल से शान्ति का अनुभव होता है। गर्मी की तीव्रता हो, पसीना छूट रहा हो, प्यास लग रही हो, गला सूख रहा हो, प्राण कण्ठ तक आ रहे हों, ऐसे समय में पानी मिल जाय तो सन्तोष होता है। द्रव्य तीर्थ शरीर पर लगे मैल को धो देता है, अशुचि को दूर करता है। जैसे द्रव्य तीर्थ दाह का शमन और अशुचि का नाश करता है इसी तरह भाव तीर्थ ताप-कषाय के मैल को और मोह-तृष्णा की प्यास को बुझाता है।

“साधु तीरथ, श्रावक तीरथ, तीरथ ज्ञान-प्रकाश

कहा, ताप कषाय का मैल मोह का, तृष्णा प्यास हरात कहा।”

द्रव्य-तीर्थ द्रव्य-जीवन-निर्वाह के लिए उपयोगी एवं प्राणी को बाहर की शान्ति देने वाला है, लेकिन भाव तीर्थ ज्ञान-दर्शन-चारित्र्य की आराधना रूप क्रोध-मन-माया-लोभ का नाश करता है। बाहर में आपके चाहे कितन ही सुख हैं, सम्पदा है, ऐश्वर्य है, अनुकूलता है पर मन में परेशानी है तो आपको सुख की अनुभूति नहीं होगी। अभी आप तत्त्वचिन्तक प्रमोदमुनि जी से सुन गए-ए.सी. कमरों में सोफा सेट लगा हुआ है, डबल गद्दा है तब करवटें लेते-लेते नींद नहीं आ रही है। आदमी साँप की तरह पल्लोंटे खाता है, क्यों? बात यह है कि बाहर की सुख-सुविधा तो है, मन की शान्ति नहीं, इसलिए नींद नहीं आती। किसी ने कुछ कह दिया, प्रतिष्ठा पर आंच का प्रसंग आ गया, मिले हुए पदार्थों में कमी का खयाल आ गया तो बाहर की अनुकूलता को प्रतिकूलता में परिवर्तित होते देरी नहीं लगती। ऐसे समय में बोल भी कड़वे लगते हैं।

कषाय का प्रबल वेग चाहे वह मिथ्यादृष्टि को है या सम्यक् दृष्टि वाले को, आप श्रावकों को हो अथवा हम साधुओं को, उससे बचने का कोई रास्ता है तो वह है ज्ञान और वीतराग वाणी। आपको सौ तरह के तनाव हो सकते हैं। तनाव में भी आप घण्टे भर सामायिक करके देखिये। सामायिक से आपका टेन्शन कम होगा। सामायिक में आप अपने आपका चिन्तन कीजिये, अपने आपको देखिये और आत्म-स्वभाव में स्थिर होने का प्रयास कीजिये। आप करेंगे तो अनुभव होगा। स्मरण, प्रार्थना, स्वाध्याय और समभाव की साधना में वह ताकत है जो आपका टेन्शन या रोग दूर कर दे। छोटी-छोटी बातों में झगडा, क्लेश और विग्रह हो सकता है। उस समय सामायिक की साधना के कषाय

की उत्पत्ति रोकी जा सकती है ।

मुझे कहना है - आप साधना कीजिये । सामायिक क्या है उसे समझिये, सत्संग में आकर अपना रंग बदलिये । मैं एक बात और जोड़कर कह रहा हूँ साधना में कदम बढ़ाने का प्रयास भी कीजिये । एक गाँव में एक भाई मिला । कहने लगा--“महाराज! साधना तो घर पर होती है । साधना के लिए एकान्त चाहिये । धर्म स्थान में घर जैसा एकान्त नहीं मिलता । साधना अपने लिए है, लोगों को दिखाने के लिए नहीं । धर्मस्थान में आकर जो लोग साधना करने की बात करते हैं यह उनका ढोंग है ।” ऐसे प्रश्न करने वाले भी हैं, हो सकते हैं । मुझे कहना है -- धर्मस्थान में साधना करना दिखावा नहीं है । प्रतिज्ञा आत्मविश्वास की सूचक है । जिसे अपने-आप पर विश्वास है, वह प्रतिज्ञा करता है । धर्म-स्थान में साधना करना और घर पर साधना करना दोनों में अन्तर है । घर में आपके विचलित होनेके अधिक प्रसंग हैं जबकि धर्मस्थान में न फोन की घण्टी बजने वाली है, न दूध वाला है और न ही बच्चों का रूदन या टी.वी की आवाज है ।

घर पर साधना करने की स्थिति में एक नहीं, अनेक बाधाएँ आ सकती हैं, धर्मस्थान पूरी तरह निर्वद्य है । आप धर्मस्थान पर आकर सामायिक करेंगे तो घर से अधिक आनन्द प्राप्त होगा । आप संकल्प कीजिये , हम आपकी संकल्प शक्ति जगाने आए हैं ।

द्रव्य पानी आ जाने से लोगोंका मन हराभरा हो गया है । अन्य पानी की तरह वीतराग वाणी का पानी जब तक अन्तर में नहीं उतरेगा तो बाहर की ठण्डक भी गर्मी का अहसास करा सकती है । आप द्रव्य तीर्थ और भाव तीर्थ दोनों को समझें ।

भाव तीर्थ है-ज्ञान-दर्शन-चारित्र और तप में आगे बढ़ने का योग । भाव तीर्थ में ज्ञान को सबसे पहले रखा । कषाय के शमन में ज्ञान जरूरी है । आज बात-बात में उत्तेजना आ रही है । हम जो कर रहे हैं वैसा ही होना चाहिये, इस तरह के भाव बन रहे हैं । ये सब कषाय बढ़ाने वाले हैं । ज्ञान कषाय के शमन के लिए

है, अहंकार के लिए नहीं, वाद-विवाद के लिए नहीं, अपनी बात दूसरों पर थोपने के लिए नहीं है ।

ज्ञान ज्योति है । ज्ञान स्वयं को प्रकाशित करता है, औरों को प्रकाशमान करता है । जरूरत है दीपक से दीपक की तरह प्रकाशित होने की । ज्ञान की साधना के लिए स्वाध्याय और समता की साधना के लिए सामायिक है । आचार्य भगवन्त कहा करते थे -

**गिरत-गिरत प्रतिदिन रस्सी भी, शिला घिसावेला।**

**करत-करत अभ्यास मोह का जोर घटावेला ॥  
कर लो ॥**

डोरी से पत्थर कठोर है । डोरी नरम है, कोमल है । एक बार डोरी पर पत्थर की चोट पड जाए तो डोरी के टुकड़े-टुकड़े हो सकते हैं । वही डोरी पत्थर पर आती-जाती रहती है तो कठोर पत्थर को घिस देती है । पत्थर पर निशान अंकित हो जाता है । कोमल डोरी जिस प्रकार कठोर पत्थर को घिस देती है उसी प्रकार पुरुषार्थ रूपी डोरी से कर्मरूपी कर्म तोड़े जा सकते हैं । चाहीये निरन्तर अभ्यास ।

आज आपके रहन-सहन की व्यवस्थाएँ बदल गई हैं । पहले बहिनें पनघट पर पानी भरने जाती थीं । मिट्टी और तांबे के बर्तन कुएँ पर बहिनें साफ करती थीं । मिट्टी के घडों के निशान वाले पत्थर आज भी कई जगह दिखाई देते हैं । पत्थर पर पड़े निशान इस बात के गवाह हैं कि क्रिया की निरन्तरता फल देती है । आप समता का ख्याल रखकर चलें तो यह जीव मोह रूपी पर्वत को तोड़ सकता है, कर्म के कलंक को मिटा सकता है । चाहिये निरन्तरता और सही दिशा में पुरुषार्थ ।

आज पुरुषार्थ की कमी दिखाई दे रही है । महाराज आए हैं तो सामायिक कर ली, नहीं तो बैठका अपने स्थान पर । मैं आपसे पूछूँ - घर में मेहमान आते हैं, तभी आप खाना खाते हैं ? मेहमान नहीं आए तो क्या आप भूखे रहते हैं ? कोई मनुहार करे तो खाते हैं या बिना मनुहार के भी खाते हैं ? भूख लगने पर आप बिना किसी मनुहार के खाते हैं । इसी तर साधना के

लिए आपको प्रेरणा की जरूरत नहीं रहनी चाहिये ।

समता की साधना छोटे-बड़े सभी कर सकते हैं। आठ साल वाला भी और साठ साल वाला भी समता की साधना 'सामयिक' कर सकता है । आज जरूरत है इस साधना को अपनाने की। समता की साधना नहीं है तो बड़े-बड़े त्याग करने वाले भी छोटी-छोटी बातों के लिए लड पडते हैं । भगवान ने आप श्रावकों और हम साधुओं को सन्देश दिया- वीतरागता भीतर की वस्तु है । आप-हम संसार में बैठे हैं इसलिए व्यवहार और निश्चय दोनों को लेकर चलना है । चार्तुमास उपस्थित है । हमें क्या करना चाहिये, कविता की कडियों में कहा-

**जीव की जतना कर लीजे ...रे....जीव की जतना कर लीजे**

**आयो वर्षाकाल धर्म की करणी कर लीजे  
॥ जी ॥**

चार्तुमास में जीव हिंसा से बचने और कषाय घटाने की प्रेरणा दी गई है । भीतर में कितनी दया है, यह तो वीतरागी जानेंगे, पर व्यवहार में भी आप कुशलतापूर्वक जीवन निर्वाह नहीं कर रहे हैं तो हिंसा के भागी बन रहे हैं । प्रभु महावीर ने हमें एक स्थान पर रहने की आज्ञा क्यों प्रदान की ? हम (साधु) जहाँ कहीं रहें वहाँ न हिंसा करेंगे न करवायेंगे और न ही उसका अनुमोदन करेंगे । भगवान् ने हम साधुओं के लिए ही नहीं सबके लिए सन्देश दिया कि वर्षाकाल में जीव जन्तुओं की उत्पत्ति ज्यादा होती है । आप साइकल से चलें, स्कुटर से चलें, मोटर से चलें, चलते समय कीड़ों की कतार आ सकती है, उनकी विराधना न हो इसका उपयोग आपको रखना चाहिये ।

कुछ लोग हैं जो यह तर्क देते हैं कि हमने कीड़े थोड़े ही मारे हैं । क्या चलना बन्द कर दें? कोई मानव ऐसा कहे तो कहना होगा उसकी दृष्टि सही नहीं है । हर प्राणी जीना चाहता है । आप दुख नहीं चाहते इसी तरह प्रत्येक प्राणी दुख नहीं चाहता। ध्यान रहे-काटोगे तो कटना पडेगा । मारोगे तो मरना पडेगा आपको कोई

बचाने वाला नहीं होगा । आप व्यवहार और निश्चय दोनों को साथ लेकर चलें ।

आज कई लोग ऐसे तो मिल जायेंगे जो आलू-प्याज की सौगन्ध ले लेते हैं, परन्तु जीवों की विराधना कैसे रूके, इसके लिए कितने लोगों का चिन्तन चलता है? आप महाराष्ट्रवासी प्रसन्न हैं। वरूण देवता आपकी तरह सेवा में है । आप पानी का उपयोग कैसे करते है, इस पर भी आपको विचार करना चाहिये । एक ओर पानी ही पानी है तो दूसरी तरफ पानी के लिए आन्दोलन हो रहे हैं । जरूरत है पानी के उपयोग को समझने की। आज पानी की नहीं, उसका उपयोग कैसे हो इसकी कमी है । दातुन के लिए एक गिलास पानी पर्याप्त है, पर विवेक नहीं इसलिए बहुत सा पानी व्यर्थ चला जाता है । स्नान के लिए कितना पानी चाहिये और आप कितना पानी बहाते हैं, कभी सोचा है ? आप निरर्थक पाप के भागी क्यों बनते हैं ?

चातुर्मास का यह काल सफल हो, इसके लिए आप निरर्थक जीव हिंसा के पाप से बचें । जितना छोड सकें, आरम्भ छोडने का प्रयास करें । रात्रि-भोजन विराधना का कारण है । आज आपके भोजन का समय बदल गया । प्रातः ९ बजे नाश्ता, दो बजे भोजन और रात्रि में ९ बजे शाम का भोजन । आप मात्र फैशन और आदत के लिए रात्रि-भोजन करते है, जो विराधना का बहुत बडा निमित्त है । इसे क्यों नहीं छोडते ? जब यह प्रेरणा करते हैं तो प्रायः यही उत्तर मिलता है । महाराज! क्या करें, घर पहुँचते-पहुँचते नौ बज जाते हैं । मैं आप से पूछूँ-क्या आपके पूर्वज कमाते नहीं थे ? बात समय की उतनी नहीं जितनी आदत की है ।

आप सुख चाहते हो तो दुख देना छोड दो । लेने के साथ देना लगा हुआ है । पावस के इस समय में कम भ्रमण करें और जीव-यतना का ध्यान रखें । जीव विराधना के निमित्तों को जितना बचा सकें, बचायें । आप सुन कर ही न रहें, जीवन में उतारने का प्रयास करेंगे तो पावसकाल आपके लिए सफल होगा । ●

## कच्छर तपशील - जुलै २०१६

### ❖ भारतीय जैन संघटना, पुणे

भारतीय जैन संघटना यांनी महाराष्ट्र राज्यातील आत्महत्याग्रस्त शेतकरी कुटुंबातील सुमारे १००० विद्यार्थ्यांच्या शिक्षणाची जबाबदारी उचलली आहे. या विद्यार्थ्यांच्या स्वागत समारंभासाठी भव्य कार्यक्रम वाघोली पुणे येथे आयोजित करण्यात आला. यावेळी दीप प्रज्वलन करताना मुख्यमंत्री श्री. देवेन्द्रजी फडवणीस, भारतीय जैन संघटनेचे संस्थापक श्री. शांतीलालजी मुथा, सौ. अमृता फडवणीस, पालकमंत्री श्री. गिरीश बापट, सामाजिक न्यायमंत्री श्री. दिलीप कांबळे, खासदार श्री. अनिल शिरोळे, श्री. अजय संचेती, श्री. शिवाजीराव आढळराव इ. मान्यवर.

### ❖ दादावाडी जैन मंदीर, पुणे

श्री. जैन श्वेतांबर दादावाडी टेम्पल ट्रस्टच्या नूतन मंदिराचे २५ वर्षे पूर्ण झाल्या निमित्त पंचान्हीका महोत्सवाचे आयोजन करण्यात आले. यानिमित्त भारतीय टपाल विभागातर्फे दादावाडी मंदिराचे विशेष पोस्ट कच्छरचे अनावरण, टपाल विभागाचे अधीक्षक श्री. अभिजित बनसोडे, श्री. ओमप्रकाशजी राका, श्री. अचल जैन, अॅड. महेंद्रजी कोठारी, अॅड. एस. के. जैन, श्री. देवीचंदजी जैन, श्री. जयप्रकाशजी ललवाणी इ. मान्यवरांच्या हस्ते करण्यात आले.

### ❖ आनंद जैन पाठशाला, पुणे

पद्मावती नगर पुणे येथे आनंद जैन पाठशाळेचे उद्घाटन प. पू. श्री. दिलीपकंवरजी म. सा. यांच्या उपस्थितीत संपन्न झाले. यावेळी मुलांना संस्कारक्षम पुस्तके व इतर साहित्याचे वाटप श्री. अभयजी संचेती, श्री. अशोकजी पगारिया, श्री. संपत बोथरा, श्री. मनसुख डुंगरवाल इत्यादींच्या हस्ते देण्यात आले.

### ❖ पी. एच. डायग्नोस्टिक सेंटर, हडपसर

पी. एच. डायग्नोस्टिक सेंटरचे १८ व्या ब्रॅन्चचे उद्घाटन २६ जून रोजी हडपसर, नोबल हॉस्पिटलजवळ संपन्न झाले. या उद्घाटन प्रसंगी महापौर श्री. प्रशांत जगताप, श्री. अभय छाजेड, आमदार माधुरीताई मिसाळ, नगरसेविका वैशाली कोद्रे, डॉ. हेमंत धोका, श्री. पारस मोदी, श्री. अमीत मोदी, श्री. चंद्रकांत धोका, श्री. चिराग जैन, श्री. रोहित धोका, श्री. सचिन धोका, श्री. अनील जैन इ. मान्यवर.

### ❖ सौ. चित्राजी बलदोटा - पुरस्कार

सद्भावना सेवा समिती व आयकॉन फाऊंडेशन तर्फे समाजसेविका सौ. चित्राजी बलदोटा यांना महाराष्ट्र कन्या गौरव पुरस्कार देऊन सन्मानित करण्यात आले. यावेळी खाबिया ग्रुपचे चेअरमन श्री. किशोरजी खाबिया, डॉ. उषा खाबिया, श्री. सुनीलजी खाबिया, श्री. नरेंद्रजी बलदोटा, श्री. श्रेणिकजी बलदोटा इ. मान्यवर.

### ❖ मॉडर्न मॉटेसरी इंटरनॅशनल प्री स्कूल-पुणे

पुणे येथील उद्योजक श्री. अल्पेश अनीलजी भनसाळी व सौ. एकता भनसाळी यांनी पिंपळे सौदागर पुणे येथे मॉडर्न मॉटेसरी इंटरनॅशनल प्री स्कूलची दुसरी शाखा सुरु केली. या उद्घाटन प्रसंगी एसीपी श्री. भानूप्रताप बर्गे, अॅड. अभय छाजेड, डॉ. टी. चन्द्रु. श्री. संजीव शर्मा, उद्योजक श्री. अनील भनसाळी इ. मान्यवर.

### ❖ महावीर इंटरनॅशनल, अहमदनगर

महावीर इंटरनॅशनल चा पदग्रहण समारंभ व प्रांतीय परिषद अहमदनगर येथे झोनचे चेअरमन श्री. रमेशचंदजी बाफना यांच्या नेतृत्वाखाली झाली. यावेळी दीप प्रज्वलन करताना श्री. अनिल कवडे, राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री. विजय बाफना, श्री. निर्मल कोठारी, श्री. रमेशजी बाफना इ. मान्यवर.

❖ **जैन सोशल ग्रुप पुणे मेन**

जैन सोशल ग्रुप पुणे मेन या ग्रुपतर्फे पर्यावरण दिनानिमित्त वृक्षारोपण, पिसोळी इंडस्ट्रियल इस्टेट मध्ये करण्यात आले. यावेळी नगरसेविका सौ. मानसीताई देशपांडे, ग्रुपच्या अध्यक्ष सौ. नयना शहा, सौ. सुलभा भंडारी, श्री. लालचंदजी जैन, श्री. हेमंत बाफना, श्री. संजय शहा, श्री. हरीशभाई शहा इ. मान्यवर.

❖ **जैन सोशल ग्रुप पुणे मिडटाऊन**

जैन सोशल ग्रुप, पुणे मिडटाऊन तर्फे ५ जून रोजी पर्यावरण दिवस अनोख्या नैसर्गिक मार्गाने साजरा करण्यात आला. यावेळी सुमारे १३० सभासदांनी गोग्रीन वर आधारित ड्रेस परिधान करून पर्यावरण सुधारासंबंधी फलक घेऊन घोषणांनी जागृती साधत दुचाकीवरून रॅली काढली. यावेळी ग्रुपचे अध्यक्ष श्री. विनोदभाई शहा, फाऊंडर प्रेसिडेंट श्री. शरदभाई शहा इ. अनेक मान्यवर रॅलीत सामील झाले होते.

❖ **जय आनंद ग्रुप, पुणे**

पुणे येथील जय आनंद ग्रुप तर्फे जागतिक पर्यावरण दिनानिमित्त “ऋषि आनंदवन” हडपसर येथे पुणे मनपा यांच्या संयुक्त विद्यमाने वृक्षारोपण करण्यात आले. यावेळी संस्थेचे अध्यक्ष श्री. विजय मर्लेचा, श्री. झुंबरलालजी कोठारी, श्री. दिलीप धोका, श्री. विजय चोरडिया, श्री. गिरधारीलालजी शिंगवी, श्री. अनिल लुंकड, श्री. रमण कोठारी, श्री. विजय पारख व पुणे मनपाचे पदाधिकारी.

❖ **क्लासिक पब्लिसिटी, अहमदनगर**

अहमदनगर येथील क्लासिक पब्लिसिटी यांना मानाचा टॅग ऑवार्ड सर्वोत्कृष्ट डिझाईनिंगसाठी मिळाला आहे. हा पुरस्कार स्विकारताना क्लासिक टीमचे निल गुगळे, तेजस कांबळे, मानसी आटोळे, निलम भोर, आभा शेते, सनि केठाडे इ. मान्यवर.



## जैन जागृति - सप्टेंबर २०१६

### पर्युषण विशेषांक

जैन समाजापर्यंत पोहचण्याचा सर्वात खात्रीशीर, सर्वात सोपा व सर्वात स्वस्त मार्ग - जैन जागृति  
जैन जागृति जाहिरात देऊन जैन समाजाशी संवाद साधा.

सप्टेंबर २०१६ ला प्रकाशित होणाऱ्या पर्युषण विशेषांकासाठी २० ऑगस्ट २०१६ पर्यंत जाहिरात पाठवा

आर्ट पेपर वर रंगीत (Colour) जाहिरात		व्हाईट पेपरवर एका रंगात (Black & White) जाहिरात	
● पूर्ण पान	₹. ८५००/-*	● पूर्ण पान	₹. ४०००/-
● १/२ पान	₹. ४६००/-*	● १/२ पान	₹. २४००/-
*डिझाईन व पॉझेटिव्ह खर्च वेगळा (₹. ७००/-)		● १/४ पान	₹. १२५०/-
		● १/८ पान	₹. ८००/-

आजच्या स्पर्धेच्या युगात जाहिरात ही अत्यावश्यक बाब झाली आहे. जैन समाजात “जैन जागृति” हे सर्वात प्रभावी माध्यम आहे. आपल्या व्यवसायाची जाहिरात “जैन जागृति” मध्ये द्या.



## जैन जागृति - १ ऑगस्ट २०१६ पासून वर्गणीत वाढ

जैन जागृति मासिक गेली ४७ वर्षे दरमहा नियमितपणे प्रकाशित होत आहे. याबद्दल आमचे वर्गणीदार बंधु, लेखक, जाहिरातदार, प्रचारक प्रतिनिधी इत्यादी सर्वांचे आम्ही आभारी आहोत.

जैन जागृति मासिकाची सुरुवात १५ ऑगस्ट १९६९ रोजी झाली. या मासिकात धार्मिक, सामाजिक, व्यापार, आरोग्य व गृहोपयोगी लेख देण्यात येतात व सर्व संप्रदायांच्या महत्वाच्या बातम्या देण्यात येतात. साधु-संतांचे लेख, बोधकथा लेखाद्वारे उज्ज्वल जीवनाची प्रेरणा दिली जाते. जैन तीर्थंकर चरित्रे, तीर्थस्थानांची वर्णने, थोर जैन संत, जैन राजे, मंत्री, दानवीर महापुरुष यांची जीवनचरित्रे देऊन जैन इतिहास सर्वापर्यंत पोचविण्याचे कार्य केले जाते. दीपावली पूजनाची जैन विधी, जैन विवाह पध्दत इ. विधी अंकात देवून समाजात लोकप्रिय केली आहेत.. समाज प्रबोधन लेखाद्वारे सामाजिक, धार्मिक प्रश्नावर समाजात विचारमंथन केले. अनेक नवीन लेखांना आपले विचार मांडण्यासाठी व्यासपीठ दिले.

जैन जागृति मासिक नेहमीच लोकांना उपयुक्त व माहितीपूर्ण साहित्य प्रकाशित करत आहे. जे जे चांगले त्याला जैन जागृतित स्थान दिले जाते. सुसंस्कार व सदाचाराचा पुरस्कार करणारे साहित्य व बातम्या जैन जागृतित प्रकाशीत केल्या जातात. आपणास हे सर्व कार्य आवडले असेलच.

जैन जागृति मासिकाचे सध्या ३५ प्रतिनिधी कार्यरत आहेत त्यामुळे जैन जागृति मासिक महाराष्ट्र व भारतातील शहरे, तालुका, गावे इ. ठिकाणी पोहचले आहे. पर्युषण विशेषांक, दीपावली विशेषांक व भगवान महावीर जन्मकल्याणक विशेषांक या तीन विशेषांका बरोबर दरवर्षी एकूण १२ अंक प्रकाशीत केले जातात.

जैन जागृति मासिकाच्या सर्व खर्चात गेल्या काही वर्षांमध्ये मोठ्या प्रमाणात वाढ झालेली आहे. कागद, छपाई, डी टी पी, कव्हर कागद, बाईडींग, प्रवास खर्च इ. खर्च वाढले आहेत. पण गत ५ वर्षांपासून जैन जागृतिच्या वर्गणी दरात वाढ केलेली नाही. हे सर्व लक्षात घेता १ ऑगस्ट २०१६ पासून जैन जागृति मासिकाचे वर्गणी दर पुढील प्रमाणे राहतील.

### ● जैन जागृति - वर्गणीचे दर ●

पंचवार्षिक	२२०० रु.	त्रिवार्षिक	१३५० रु.	वार्षिक	५०० रु.
------------	----------	-------------	----------	---------	---------

जैन जागृतिच्या ४७ वर्षांच्या प्रवासात आपण जे नेहमी सहकार्य दिले आहे ते तसेच मिळावे असा दृढ विश्वास आहे. सुसंस्कार व सदाचाराचा पुरस्कार करणाऱ्या जैन जागृति मासिकाचे आपण स्वतः व आपले मित्र, नातेवाईक यांना या मासिकाचे वर्गणीदार होण्याचे आव्हान करा किंवा त्यांची “जैन जागृति” मासिकाची वर्गणी भरून अंक भेट पाठवा. - संपादक

जाहिरातदार व वर्गणी - रोख/मनिऑर्डर/ ड्राफ्ट/  
AT PAR चेक/पुणे चेकने/ Online/website  
'जैन जागृति' नावाने पाठवावी किंवा संपर्क करावा.

### Jain Jagruti - Bank Account Details

Bank : STATE BANK INDIA Branch - Market Yard,  
Current a/c No.: 10521020146 Pune 37  
IFS Code : SBIN006117